पूज्य बहिनश्री की तत्त्वचर्चा–सी.डी.–३ A

प्रश्न :– भगवान की वाणी जैसे खाली नहीं जाती, वैसे गुरुदेव की वाणीसे भी सम्यग्दृष्टि धर्मात्मा जागृत हो जाये।

समाधान :– भगवान की वाणी खाली नहीं जाती, वैसे गुरुदेव की वाणी खाली नहीं जाती। सभी के हृदय का परिवर्तन हो जाये। सब को बाह्य के आग्रह, मतमतांतर के आग्रह छूट जाये। अंतर में दूसरा कुछ करना है ऐसा हो जाये।

प्रगट और अप्रगट मेल ही है। पर्याय का स्वरूप तो प्रगट है और द्रव्य अप्रगट है। स्वयं जानता नहीं, द्रव्य अप्रगट तो शक्ति में है। बाकी द्रव्य किसीने छिपाया नहीं है, द्रव्य प्रगट है।

मुमुक्षु :– अप्रगट भी कहते हैं और प्रगट भी कहते हैं।

समाधान :– हाँ, दोनों कहते हैं। पर्याय अपेक्षासे अप्रगट। स्वयं खुदसे प्रगट है। पर्याय खुद परिणमनस्वरूप है इसलिये उसे प्रगट कहने में आता है। मेल ही है।

मुमुक्षु :– मेल तो है लेकिन हमको मेल नहीं होता। किसी भी प्रकारसे अप्रगट का आश्रय करना..

समाधान :– स्वयं स्वरूपसे तो प्रगट है। उसका आश्रय लेनेयोग्य है। उसका स्वभाव तो प्रगट ही है। पर्याय तो उसे वेदन में आती है इसलिये उसे प्रगट कहते हैं। विभाव में तो राग–द्वेष का वेदन है, स्वभाव में शुद्ध पर्याय का वेदन है, स्वानुभूति का वेदन है। द्रव्य को उसकी अपेक्षासे अप्रगट कहते हैं, लेकिन द्रव्य स्वयं स्वरूपसे प्रगट है। उसका आश्रय लेने योग्य है। आश्रय ले सकते हैं। उसका स्वभाव ग्रहण करे तो आश्रय ले सकते हैं। ज्ञायक स्वभाव है स्वयं, वह आश्रय लेने योग्य है और लेते भी हैं।

मुमुक्षु :– कार्य तो पर्याय में होता है तो महत्ता तो पर्याय की होनी चाहिये।

समाधान :– कार्य पर्याय में होता है लेकिन किसके आश्रयसे होता है? जिसका आश्रय लेती है उसकी महत्ता है। अनन्त शक्तिसे भरा आत्मा है। पर्याय तो एक क्षण के लिये होती है। प्रतिक्षण नयी–नयी पर्याय होती है। इसलिये महत्ता तो द्रव्य की है कि जो अनन्त शक्तिओंसे भरपूर (है)। चाहे जितनी पर्यायें प्रगट हो तो भी उसका स्वभाव तो खाली नहीं हो जाता। वह तो अनन्त–अनन्त स्वभावसे भरा है। अनन्त काल तक आनन्द प्रगट हुआ करे तो भी वह तो अनन्त ही अनन्त रहता है। अनन्त ज्ञान है। लोकालोक को एक समय में जानता है, दूसरे समय में उसका ज्ञान भी खाली नहीं होता। इतना जाना इसलिये अब ज्ञान खत्म हो गया, ऐसा भी नहीं है। अनन्त शक्तिसे भरा सामर्थ्य द्रव्य में है। द्रव्य की महत्ता है।

पर्याय की महत्ता, शुद्ध पर्याय प्रगट हुई और शुद्ध वेदन में आती है, केवलज्ञान प्रगट होता है, साधना की पर्याय प्रगट होती है इसलिये उस अपेक्षासे पर्यायने अपने स्वभाव का आश्रय किया इसलिये महत्तायुक्त है। फिर भी द्रव्य तो अनन्त शक्तिसे भरा है इसलिये द्रव्य तो महामहिमावंत है। केवलज्ञान महिमावंत है, लेकिन उसे जिस द्रव्य का आश्रय है वह द्रव्य तो उससे भी महिमावंत है।

मुमुक्षु :- द्रव्य और पर्याय ऐसे देखे तो बहुत समीप है।

समाधान :- समीप ही है, भिन्न थोड़े ही न है। द्रव्य और पर्याय.. द्रव्य का आश्रय करनेसे शुद्ध पर्याय प्रगट होती है। शुद्ध पर्यायरूप स्वयं परिणमता है। पर्याय भिन्न है और द्रव्य भिन्न है ऐसा नहीं है। वह तो अंश-अंशी का भेद है। बाकी पर्याय कहीं और जगह भिन्न है और द्रव्य कहीं और जगह भिन्न है, एकदम अलग-अलग है ऐसा तो नहीं है।

मुमुक्षु :- दो भाग नहीं है।

समाधान :- दो भाग नहीं है उसके। दो द्रव्य के दो भाग है ऐसे द्रव्य-पर्याय के दो भाग है ऐसा नहीं है। अंशी पूरा है और वह (पर्याय) अंश है, इतना भेद है। उसे खोजने के लिये दूर नहीं जाना पड़ता। द्रव्य के आश्रयसे पर्याय होती है। इसलिये द्रव्य के खोजने के लिये कहीं दूसरी जगह जाना पड़ता है ऐसा नहीं है। दोनों समीप ही है, दूर-दूर नहीं है। जिसके आश्रयसे पर्याय होती है वह द्रव्य कैसा है? ऐसे द्रव्य का मूल स्वभाव देखे तो द्रव्य खुद का अस्तित्व रखता है और वह उसके लक्षणसे पहचाना जा सकता है।

अनादि कालसे पर्यायपर दृष्टि है। इसलिये द्रव्य पहचानने में आता नहीं। दृष्टि उसकी बाहर है, विभावपर्याय पर दृष्टि है इसलिये वह स्वभाव को पहचानता नहीं। इसलिये उसे दूर लगता है। लेकिन दूर नहीं है, स्वयं ही है। उसमें दूर कहाँ था? उसे भ्रान्ति में दूर हो गया है। दूर नहीं है, समीप ही है। कोई बाह्य वस्तु नहीं है कि उसे खोजने जानी पड़े, स्वयं ही है। स्वयं ही अन्दर में पहचानने में आये ऐसा है। द्रव्य, गुण और पर्याय वह सब द्रव्य का स्वरूप है।

मुमुक्षु :- तीनों की महत्ता उसकी अपेक्षासे है।

समाधान :- प्रत्येक की अपेक्षासे प्रत्येक की महत्ता है। द्रव्य अनन्त शक्तिसे पूर्ण है इसलिये द्रव्य भी महिमावंत, महामहिमावंत है। अनन्त शक्तियाँ सब द्रव्य में भरी है। लेकिन शुद्ध पर्याय प्रगट होती है वह भी महिमावंत है, साधकदशा महिमावंत है, पूर्ण केवलज्ञान महिमावंत है। जिस शुद्ध द्रव्य के आश्रयसे जो पर्याय प्रगट हुई वह शुद्धरूप परिणमती है वह पर्याय भी महिमावंत है। सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र रत्नत्रय इत्यादि सब महिमावंत है। उसे जिसका आश्रय है ऐसा द्रव्य महामहिमावंत है। सब का आश्रय एक द्रव्य है।

मुमुक्षु :- प्रवचनसार में अंतिम पाँच गाथाओँ को पंचरत्न कहा। उसमें तो संसारतत्त्व का भी वर्णन आता है। तो वह भी...?

समाधान :- द्रव्य स्वयं रत्न है न! पंच रत्न। (संसारतत्त्व को) अपेक्षासे रत्न कहा है। स्वभाव को पहचाने तो दोनों आमनेसामने है, उसे बीच में संसार को पहचानना होता है। विभाव और स्वभाव। मिथ्यात्व को गुणस्थान कहा है। मिथ्यात्व गुणस्थान को गुणरूप कैसे कहें? विपरीत पर्याय है तो उसे गुणस्थान कहा है। ऐसे यह स्वयं स्वभावरूप आत्मा नहीं है। उस रूप परिणमित हुआ तो उसे रत्न कहा है। मिथ्यात्व गुणस्थान कोई गुण की भूमिका नहीं है। गुण का स्थान (नहीं है)। (सिर्फ) नाम गुणस्थान कहा है। गुणसे भरपूर आत्मा (है), उसकी विपरीत पर्याय को गुण का आरोप दिया है।

मुमुक्षु :- उसकी पर्याय है इसलिये...

समाधान :- इसलिये। रत्नाकर आत्मा (है), तो उसकी विपरीत पर्याय को रत्न का आरोप दिया है।

मुमुक्षु :- सुने तब तो ऐसा लगता है कि तुरन्त हो सकता है। फिर प्रयोग में लाने जाते हैं वहाँ सब फेरफार हो जाता है।

समाधान :- पुरुषार्थ करे तो होता है। अनादिस बाहर की अभ्यास है इसलिये हो सकता नहीं। लेकिन स्वभाव खुद का है इसलिये हो सके ऐसा है। प्रयोग में आने में उसे मुश्किल लगता है। विचार करे और निर्णय में बैठे तो भी पुरुषार्थ करके वापस मुड़ना, परिणति को वापस मोड़नी उसे मुश्किल लगता है। परिणति अनादिसे विभाव के साथ एकत्व हो रही है। उसे भिन्न करनी उसे (मुश्किल लगता है)। एकदम पुरुषार्थ करना उसे मुश्किल पड़ता है, लेकिन हो सके ऐसा है। अनन्त (जीव) मोक्ष में गये हैं, वे सब पुरुषार्थ करके ही गये हैं। चैतन्य को पहचानकर ही गये हैं। अनादि का अभ्यास को तोड़कर, अपना जो अनादि का स्वभाव है उसे प्रगट किया है। स्वयं का स्वभाव जो अनादि शाश्वत है उसे प्रगट किया। विभाव के संस्कार तोड़ दिये हैं। अनन्त जीव उसप्रकार साधन को प्राप्त हुए और मोक्ष गये हैं।

मुमुक्षु :- मुनिवरों तो महा निधान दे गये हैं।

समाधान :- निधान दिया है, खजाना खोल दिया है। मुक्ति की पर्याय इत्यादि कैसे प्रगट हो, वह मार्ग बताया है। शास्त्रों में आता है, गुरुदेवने उसका रहस्य खोला है। सीधी रीतसे पहले शास्त्र कोई समझता नहीं था।

मुमुक्षु :- कोई पढ़ता भी नहीं था और समझते भी नहीं थे।

समाधान :- समझते नहीं थे, गुरुदेवने सब रहस्य खोले हैं। एक-एक शब्द का अर्थ करके उसके भाव कितने गहरे हैं, वह गुरुदेवने खोला है। सब कहाँ पड़े थे, बाह्य क्रिया में पड़े थे। मिथ्या, कुदेव, कुगुरु सब मानते थे। शुभभावसे धर्म होता है, ऐसी सब मान्यता कितनी स्थूल मान्यता थी। गुरुदेवने द्रव्य-गुण-पर्याय का स्वरूप समझाया। उसमेंसे द्रव्य-गुण-पर्याय के विचार में अभी सब आ गये हैं। वह सब तो कहीं दूर रह गया। वह सब

तो स्थूल (है)। द्रव्य–गुण–पर्याय का स्वरूप गुरुदेवने समझाया। अब द्रव्य–गुण–पर्याय के विचार आते हैं। बाहरसे धर्म होता है, ऐसा मानते थे। सामायिक करे तो धर्म होता है, प्रतिक्रमण के पाठ बोले तो धर्म होता है, उपवास करे तो धर्म होता है, ऐसी सब मान्यता बाहरसे थी। कोई ज्यादा करे तो शुभभाव रखें तो धर्म होता है। लेकिन वह शुभभाव भी आत्मा का स्वभाव नहीं, पुण्यबन्ध का कारण है। गुरुदेवने वह बारंबार कहा इसलिये सब को बैठा।

मुमुक्षु :– एकदम अंदरसे घूंटन करवाया।

समाधान :– बार–बार घूंटन करवाया। नहीं तो संप्रदाय के आग्रह छूटने (आसान नहीं था)। वह तो गुरुदेव की वाणी ऐसी ज़ोरदार थी तो टूट गये।

मुमुक्षु :– गुरुदेव का परिवर्तन हुआ तो पूरे समाज का परिवर्तन हुआ।

समाधान :– समाज का परिवर्तन हुआ।

मुमुक्षु :– शुभ का वज़न रह जाता है इसलिये हटता नहीं।

समाधान :– शुभ में जीव शुभ की रुचि में अटक जाता है। शुभ बीच में आये बिना रहता नहीं। अशुभभावसे बचने के लिये शुभभाव बीच में आते हैं। जिनेन्द्रदेव की भक्ति, गुरु की भक्ति, शास्त्र स्वाध्याय, तत्त्वविचार सब आता है। शुभभाव बीच में आये बिना रहते नहीं। लेकिन उसकी रुचि (हो जाये), उससे धर्म होगा ऐसा माने तो उसे यथार्थ श्रद्धा नहीं है। उससे भी स्वयं भिन्न है। वह अपना स्वभाव नहीं है। ऐसी श्रद्धा रखकर शुभभाव में जुड़े कि यह मेरा स्वरूप नहीं है। लेकिन अभी अंदर आत्मा प्रगट हुआ नहीं हो और शुभ को छोड़ दे तो अशुभ में चला जाये। शुभ बीच में आये बिना रहता नहीं। शुभ अपना स्वभाव नहीं है। मुनिवरों को भी शुभभाव आते हैं। पंच महाव्रत के, देव–गुरु–शास्त्र के, भक्ति के (भाव) आते हैं।

मुमुक्षु :– मुनिवरोंने भगवान की भक्ति की है।

समाधान :– मुनिवरोंने भगवान के स्तोत्र रचे हैं।

मुमुक्षु :– भक्ति में भी तत्त्व रखा है।

समाधान :– तत्त्व है। तो गृहस्थाश्रम में तो आये। मुनिवरों को आये तो जहाँ सम्यग्दर्शन है वहाँ तो आता ही है।

पूज्य बहिनश्री की तत्त्वचर्चा–सी.डी.–३ B

प्रश्न :– .. भले विकल्परूप हो, निर्विकल्प दशा नहीं हुई हो, लेकिन पूरा एक अभेद आत्मा का ग्रहण कैसे करना?

समाधान :– अभेद आत्मा यानी मूल वस्तु का ग्रहण। द्रव्य पर दृष्टि। अस्तित्व ग्रहण।